आपके आनन्द के लिए

जॉन पाइपर

आपके आनन्द के लिए

जॉन पाइपर

Aapke Aanand Ke Liye
(Hindi)

For Your Joy
by John Piper

Copyright © 2005 Desiring God

First Hindi edition 2010

All rights reserved.
No part of this publication may be reproduced in any form
or by any means, electronic, or mechanical, including photocopying,
recording, or any information storage and retrieval system,
without prior permission in writing from the publisher.

Hard copy is available at www.christianstore.in

विषय-वस्तु

प्रस्तावना..... 07

यीशु को क्यों मरना था?..... 11

परमेश्वर कैसे मुझसे प्रेम कर सकता है?..... 15

क्या होगा यदि मैं परमेश्वर से प्रेम न करूं?..... 19

मैं ऐसे परमेश्वर से कैसे प्रेम कर सकता हूँ
जो इतनी बुराई होने देता है..... 23

यह सब परमेश्वर के विषय ही क्यों है?..... 27

यह सब मेरे लिए क्या अर्थ रखता है?..... 31

मुझे क्या करना चाहिए?..... 37

जॉन पाइपर की अनुशंसित रचनाएं..... 41

डिसायरिंग गॉड..... 42

आप-जो-कुछ-दे-सकते-हैं..... 43
लेखक..... 44

प्रस्तावना

दो हज़ार वर्ष पूर्व, यीशु और उसके मित्र उस प्रसिद्ध मत की अफवाह के विषय वार्तालाप कर रहे थे। उसने उनसे पूछा, "परमेश्वर के पुत्र के विषय में लोग क्या कहते हैं?" उन्होंने जो आम उत्तर सुने थे उनमें से कुछ को बताते हुए उत्तर दिया। परंतु तब यीशु ने बात को बदला। सूचनात्मक से व्यक्तिगत् की ओर मुड़ते हुए, उसने उनकी आँखों में आँखें डालकर पूछा, "परंतु तुम मुझे क्या कहते हो?

दूसरे-लोग-क्या-कहते-हैं प्रश्न का उत्तर देना सहज है। परंतु ऐसा एक समय आता है जब हमें यीशु के प्रश्न का सामना करना होता है। हम यीशु के विषय क्या कहते हैं?

सबसे आम उत्तर है कि यीशु एक महान् नैतिक शिक्षक था - एक आदर्श शिक्षक और तरसपूर्ण मनीषी था। परंतु सी.एस. लुईस - अंग्रेज लेखक जिन्होंने *द लायन, द विच, एण्ड द वारड्रोब* लिखा - इसके बदले ऐसे लघुकरण से बच जाते हैं:

मैं यहाँ किसी को भी उस सच में मूर्खतापूर्ण बात कहने से जो कि लोग अक्सर उसके विषय में कहते हैं रोकने का प्रयास कर रहा हूँः "मैं यीशु को एक महान नैतिक शिक्षक के रूप में ग्रहण करने के लिए तैयार हूँ, परंतु परमेश्वर होने के उसके दावे को मैं नहीं मानता हूँ।" यह वह बात है जिसे हमें नहीं कहना चाहिए। एक मनुष्य जो मात्र एक मनुष्य था और यीशु ने जिस प्रकार की बातें कहीं वह एक महान नैतिक शिक्षक नहीं रहा होगा। वह या तो एक विक्षिप्त होगा - एक ऐसे मनुष्य के स्तर पर जो कि कहता है कि वह एक तला अंडा है - या फिर वह नरक का शैतान होगा। आपको चुनना है। या तो यह मनुष्य परमेश्वर का पुत्र था, और हैः या फिर एक पागल या उससे भी बुरा कोई। आप उसे मूर्ख समझकर चुप करा सकते हैं, आप उस पर थूक सकते और एक दुष्टात्मा समझकर मार डाल सकते हैंः या फिर आप उसके चरणों पर गिरकर उसे प्रभु और परमेश्वर कह सकते हैं। परंतु हम उसके एक महान मानवीय शिक्षक होने के विषय किसी प्रोत्साहन देती अनापशनाप

बातें न कहें। उसने हमारे लिए इसकी कोई गुंजाईश नहीं रखी है। उसका यह आशय नहीं था।

यह प्रश्न - तुम उसे क्या कहते हो? - वह सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है जिसे आप पूछ सकते और जिसका आप उत्तर दे सकते हैं। इस पुस्तक मे जॉन पाईपर यीशु के विषय इन कुछ सबसे आम तथा महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर देते हैंः वह कौन है, वह क्यों आया, उसने क्या किया - और हमें इन सब पर क्यों ध्यान देना चाहिए।

यदि आपने इनमें से कुछ प्रश्नों को किया है और आप कुछ उत्तर चाहते हैं - आपके अपने विचारों तथा ज्ञान पर आधारित नहीं परंतु परमेश्वर के वचन पर - तो हम आपको अपने साथ होने के लिए आमंत्रित करते हैं। आपके आनन्द के लिए।

यीशु को क्यों मरना था?

उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है कि जो पाप पहले किए गए, और जिनकी परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आनाकानी की, उनके विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रगट करें।

रोमियों 3:25

प्रेम इसमें नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, परंतु इसमें है कि उसने हमसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिए अपने पुत्र को भेजा।

1 यूहन्ना 4:10

मसीह ने जो हमारे लिए श्रापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के श्राप से छुड़ाया क्योंकि लिखा है, जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह श्रापित है।

गलातियों 3:13

यदि परमेश्वर *सच्चा न्यायी* नहीं होता तो उसके पुत्र को दुख उठाने तथा मरने के लिए कोई *मांग* नहीं की गई होती। और यदि परमेश्वर प्रेमी नहीं होता तो उसके पुत्र के लिए दुख उठाने तथा मरने के लिए कोई स्वेच्छा नहीं होती। परंतु परमेश्वर सच्चा न्यायी तथा प्रेमी दोनों है। इसलिए उसका प्रेम उसके न्याय की माँगों को पूरा करने के लिए तैयार है।

परमेश्वर की व्यवस्था माँग करती है, "तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, अपने सारे प्राण, तथा अपनी सारी शक्ति से प्रेम कर" (व्यवस्था. 6:5)। परंतु हम सबने दूसरी वस्तुओं अथवा बातों से अधिक प्रेम किया है। पाप यह है – उससे बढ़कर करना, और उन प्राथमिकताओं के अनुसार कार्य करना। इसलिए, बाइबल कहती है, "सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है" (रोमियों 3:23)। जिसमें हमें सबसे अधिक आनन्द मिलता है हम उसकी प्रशंसा करते हैं। और यह परमेश्वर नहीं है।

इसलिए पाप छोटा नहीं है, क्योंकि यह किसी छोटे सर्वशक्तिमान के विरूद्ध नहीं है। एक अपमान की गम्भीरता अपमानित किए गए की प्रतिष्ठा से उत्पन्न होती है। इस विश्व का सृष्टिकर्ता आदर, सम्मान तथा निष्ठा के असीम योग्य है। इसलिए, उससे प्रेम न

करना कोई हल्की बात नहीं है – यह विश्वासघात है। यह परमेश्वर की निन्दा है और मानवीय खुशी को नाश करना है।

क्योंकि परमेश्वर सच्चा न्यायी है, वह इन अपराधों को झाड़कर विश्व के कालीन के नीचे नहीं कर देता है। वह उनके प्रति पवित्र क्रोध अनुभव करता है। वे दण्डित किए जाने के योग्य हैं और उसने स्पष्ट कहा है, "पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है" (रोमियों 6:23)। "जो प्राण पाप करे वही मरेगा" (यहेजकेल 18:4)।

समस्त पापों के ऊपर एक पवित्र शाप लटका हुआ है। दण्ड न देना अन्याय होगा। परमेश्वर को अप्रतिष्ठित करने का सत्यापन होगा। वास्तविकता के मूल में एक झूठ राज्य करेगा। इसलिए, परमेश्वर कहता है, "जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी सभी बातों का पालन नहीं करता, वह शापित है" (गलातियों 3:10; व्यवस्था. 27:26)।

परंतु परमेश्वर का प्रेम उस शाप पर निर्भर नहीं करता है जो समस्त पापी मनुष्यजाति पर लटका है। उसे क्रोध करने से संतुष्टि नहीं होती है, चाहे वह क्रोध कितना भी पवित्र हो। इसलिए परमेश्वर ने उसके अपने पुत्र को भेजा कि उसके क्रोध को सह ले और उन सब के लिए जो उस पर विश्वास लाते हैं उस शाप को उठा ले। "मसीह ने

व्यवस्था के शाप से हमें मूल्य चुकाकर छुड़ाया, और स्वयं हमारे लिए शापित बना" (गलातियों 3:13)।

उपरोक्त उद्धरत पाठ में शब्द 'प्रायश्चित' का यही अर्थ है (रोमियों 3:25)। यह एक प्रतिहस्थ प्रदान करने के द्वारा परमेश्वर के क्रोध को दूर करना दर्शाता है। यह प्रतिहस्थ स्वयं परमेश्वर के द्वारा ही प्रदान किया गया है। यह प्रतिहस्थ, यीशु ख्रीस्त, मात्र उस क्रोध को रद्द नहीं करता है, परंतु वह इसे सह लेता है और इसे हमारी ओर से स्वयं की ओर मोड़ लेता है। परमेश्वर का क्रोध न्याय संगत है और वह दिखाया गया था, रोका नहीं रखा गया।

हम परमेश्वर के साथ खिलवाड़ न करें या उसके प्रेम को तुच्छ न समझें। परमेश्वर द्वारा प्रेम किए जाने के प्रति हम कभी भय के साथ खड़े नहीं होंगे जब तक कि हम गंभीरता के साथ अपने पापों को नहीं देखेंगे और हमारे विरूद्ध उसके क्रोध के सच्चे न्याय को। परंतु जब, अनुग्रह द्वारा, हम अपनी अयोग्यता को पहचानेंगे, तब हम ख्रीस्त के दुख उठाने तथा मृत्यु पर दृष्टि करेंगे और कहेंगे, "प्रेम इसमें नही कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, परंतु इसमें है कि उसने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को (क्रोध सहने के लिए) भेजा" (1 यूहन्ना 4:10)।

परमेश्वर कैसे मुझसे प्रेम कर सकता है?

हमको उसमें उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है।

इफिसियों 1:7

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।

यूहन्ना 3:16

किसी धर्मी जन के लिए कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिए कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।

रोमियों 5:7–8

हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम की सीमा को दो बातों द्वारा दिखाया गया है। एक हमारे पापों के दण्ड से हमें बचाने के लिए उसके बलिदान की वह सीमा है। दूसरा हमारी वह अयोग्यता की सीमा है जब उसने हमें बचाया।

उसके बलिदान के स्तर को हम इन शब्दों में सुन सकते हैं, "उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया" (यूहन्ना 3:16)। हम इसे शब्द *ख्रीस्त* में भी सुनते हैं। यह वह नाम है जो कि यूनानी *ख्रिस्तोस,* या "अभिषिक्त" या "मसीहा" पर आधारित है। यह एक अति गौरवशाली शब्द है। इस मसीहा को इस्त्राएल का राजा होना था। वह रोमियों पर विजय प्राप्त करता और इस्त्राएल को शांति और सुरक्षा देता। अतः जिस व्यक्ति को परमेश्वर ने पापियों का उद्धार करने भेजा वह उसका अपना ईश्वरीय पुत्र था, उसका *एकलौता* पुत्र, और इस्त्राएल का अभिषिक्त राजा - सच में संसार का राजा (यशायाह 9:6–7)।

जब हम इस विचार में क्रूस पर चढ़ाए जाने के द्वारा उस भयानक मृत्यु को जोड़ते हैं जिसे ख्रीस्त ने सहा था, यह स्पष्ट हो जाता है कि जो बलिदान पिता और पुत्र ने दिया वह वर्णन से बाहर

महान था - जब आप परमेश्वर तथा मनुष्य के मध्य अंतर को देखें तो यह बलिदान असीम भी था।

हमारे प्रति उसके प्रेम की सीमा और भी बढ़ जाती है जब हम अपनी अयोग्यता पर ध्यान देते हैं। "हो सकता है कि किसी भले मनुष्य के लिए कोई मरने का साहस भी कर ले - परंतु परमेश्वर अपने प्रेम को हमारे प्रति इस प्रकार प्रकट करता है कि *जब हम पापी ही थे* मसीह हमारे लिए मरा" (रोमियों 5:7–8)। हम ईश्वरीय दण्ड के योग्य थे, न कि ईश्वरीय बलिदान के।

मैंने किसी को यह कहते सुना है, "परमेश्वर मेंढ़कों के लिए नहीं मरा। इसलिए वह मनुष्यों के रूप में हमारे मूल्य का प्रतिउत्तर दे रहा था।" यह अनुग्रह को समझाता है। हम मेंढ़कों से भी *बुरे* हैं। उन्होंने पाप नहीं किया है। उन्होंने विद्रोह नहीं किया है और न ही अपने जीवनों के नगण्य होने के लिए परमेश्वर की निन्दा की है। परमेश्वर को मेंढ़कों के लिए अपना प्राण नहीं देता था। वे उतने बुरे नहीं हैं। हम हैं। हमारा ऋण इतना अधिक है, कि केवल ईश्वरीय बलिदान ही उसे चुका सकता था।

हमारे लिए परमेश्वर के बलिदान को केवल एक ही रीति से

समझाया जा सकता है। यह हम नहीं हैं। यह "उसके अनुग्रह का धन है" (इफिसियों 1:7)। यह बिल्कुल मुक्त है। यह हमारी योग्यता के बदले नहीं है। यह उसकी असीम योग्यता का उमड़ना है। वास्तव में कुल मिलाकर ईश्वरीय प्रेम यही हैः अयोग्य पापियों को, एक बड़ा मूल्य चुका कर जो हमें सदाकाल के लिए सर्वोच्च खुशी देगा, अर्थात् उसकी असीम सुंदरता के साथ, वशीभूत करे।

क्या होगा यदि मैं परमेश्वर से प्रेम न करूं?

जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।

यूहन्ना 3:36

और यह अनन्त दण्ड भोगेंगे, परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।

मत्ती 25:46

वे प्रभु के सामने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे।

2 थिस्सलुनीकियों 1:9

अपने सबसे खुशी के समयों में हम मरना नहीं चाहते हैं। मृत्यु की अभिलाषा तब ही जागृत होती है जब हमारे दुख असहनीय प्रतीत होते हैं। ऐसे समयों में जो हम वास्तव में चाहते हैं वह मृत्यु नहीं परंतु राहत है। हम चाहते हैं कि अच्छे समय फिर आएं। हम चाहते हैं कि पीड़ा समाप्त हो। हम चाहते हैं कि हमारे प्रिय लोग कब्र से वापस निकल आएं। हम जीवन और आनन्द चाहते हैं।

हम अपने आपके साथ मज़ाक करते हैं जब हम एक भांति भांति जिए गए जीवन की पराकाष्ठा के रूप में मृत्यु पर रोमानी रंग चढ़ाते हैं। यह एक शत्रु है। वह इस संसार के समस्त अद्भुत सुखों से हमें अलग करती है। हम बुराइयों में निम्नत्तर रूप में मृत्यु का सुंदर नाम देते हैं। वह जल्लाद जो हमारे दुखों में सांघातिक प्रहार करता है अभिलाषा की पूर्ति नहीं है, परंतु आशा का अंत है। मानव हृदय की अभिलाषा जीना और खुश रहना है।

परमेश्वर ने हमें ऐसा ही बनाया है। "उसने मनुष्य के मनों में अनंत का ज्ञान भी उत्पन्न किया है" (सभोपदेशक 3:11)। हम परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए हैं, और परमेश्वर जीवन से प्रेम करता और सदा जीवित है। हम सदा के लिए जीवित रहने के लिए बनाए गए थे। और हम रहेंगे भी। अनंत जीवन का विलोम सर्वनाश

नहीं है। यह नर्क है। किसी और से बढ़कर यीशु ने इसके विषय बताया, और स्पष्ट किया कि जो अनंत जीवन वह देता है उसे अस्वीकार करना अभिलोपन में परिणित नहीं होगा, परंतु परमेश्वर के क्रोध की विपत्ति में: "जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनंत जीवन उसका है, परंतु वह जो पुत्र की नहीं मानता जीवन नहीं देखेगा, परंतु परमेश्वर का प्रकोप उस पर बना रहता है (यूहन्ना 3:36)।

और यह प्रकोप सदा के लिए बना रहता है। यीशु ने कहा, "ये लोग अनंत दण्ड भोगेंगे, परंतु धर्मी अनंत जीवन में प्रवेश करेंगे" (मत्ती 25:46)। यह वर्णन से बाहर सच्चाई है जो परमेश्वर के साथ उदासीनता था निन्दापूर्ण व्यवहार की असीम बुराई को बताती है। अतः यीशु चेतावनी देता है, "यदि तेरी आँख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकाल फेंक! उत्तम यह है कि तू काना होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करे, अपेक्षा इसके कि तू दो आँखें रहते हुए नरक में डाला जाए 'जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और न आग ही बुझती है'" (मरकुस 9:47–48)।

अतः अनंत जीवन दुख और सुख से मिला जुला इस जीवन का विस्तार मात्र नहीं है। जैसे कि नरक इस जीवन का सबसे बुरा परिणाम है वैसे ही 'अनंत जीवन' सर्वोत्तम परिणाम है। यह सर्वोच्च

तथा सदा बढ़ती आनन्द है जहाँ पाप और सब दुख समाप्त हो जाएंगे। इस पतित सृष्टि में जो कुछ बुरा तथा हानिकर है। वह सब कुछ जो अच्छा है - वह सबकुछ जो सच्चे तथा सर्वदा के आनन्द को देगा - संरक्षित रखा जाएगा और शुद्ध किया एवं बढ़ाया जाएगा।

हम बदल जाएंगे ताकि हम खुशी के उन पहलुओं के योग्य हों जो इस जीवन में हमारी समझ से परे थे। "जिन बातों को आँख ने नहीं देखा और न कान ने सुना और जो मनुष्य के हृदय में नहीं समाई, उन्हीं को परमेश्वर ने अपने प्रेम करनेवालों के लिए तेयार किया है" (1 कुरिं. 2:9)। इस जीवन के प्रत्येक पल सच है, अभी और हमेशाः क्योंकि जो मसीह पर विश्वास करते हैं उनके लिए उस उत्तम का आना शेष है। हम परमेश्वर की संपूर्ण महिमा को देखेंगे। "और अनंत जीवन यह है कि तुझे जो एकमात्र सच्चा परमेश्वर है और यीशु मसीह को जानें जिसे तूने भेजा है" (यूहन्ना 17:3)। इसीलिए मसीह ने दुख उठाया और मरा। हम उसे अपने निज धन के रूप में अपनाकर क्यों कर न जिएंगे?

मैं ऐसे परमेश्वर से कैसे प्रेम कर सकता हूँ जो इतनी बुराई होने देता है?

यद्यपि तुम लोगों ने मेरे लिये बुराई का विचार किया था; परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया।

उत्पत्ति 50:20

क्योंकि सचमुच तेरे सेवक यीशु के विरोध में, जिसे तू ने अभिषेक किया, हेरोदेस और पुन्तियुस पीलातुस भी अन्य जातियों और इस्राएलियों के साथ इस नगर में इकट्ठे हुए, कि जो कुछ पहले से तेरी सामर्थ और मति से ठहरा था वही करें।

प्रे.काम 4:27–28

गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वश में हैं।

व्यवस्थाविवरण 29:29

पीड़ा और बुराई के विषय में सबसे गूढ़ बात हम कह सकते हैं वह यह है कि, यीशु मसीह में, परमेश्वर ने उसमें प्रवेश किया और उसे भलाई में बदल दिया। बुराई की उत्पत्ति रहस्य का परदा ओढे हुए है। बाइबल हमें उतना नहीं बताती है जितना हम शायद जानना चाहें। वरन् यह कहती है, "गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वश में है" (व्यवस्था. 29:29)।

बाइबल का लक्ष्य यह स्पष्ट करने का नहीं है कि बुराई कहाँ से आई, परंतु यह प्रदर्शित करने का है कि परमेश्वर उसमें कैसे प्रवेश करता और उसे बिल्कुल उल्टा कर देता है - अर्थात् अनन्त धार्मिकता तथा आनन्द में। संपूर्ण पवित्रशास्त्र में ऐसे संकेत है कि मसीहा ऐसा ही करेगा। याकूब का पुत्र, यूसुफ, मित्र में दासत्व के लिए बेच दिया गया था। सत्तर वर्षों तक वह त्यागया हुआ, प्रतीत होता है। परंतु परमेश्वर उस स्थिति में उपस्थित था और उसने उसे मिस्त्र का शासक बनाया, कि एक घोर अकाल में वह उन्हीं लोगों को बचा सका जिन्होंने उसे बेच दिया था। यह कहानी उस एक ही बात में सरगर्भित है जो यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, "तुमने मेरे साथ बुराई करने की ठानी थी, परंतु परमेश्वर ने उसी को भलाई के लिए ले लिया" (उत्पत्ति 50:20)। यीशु मसीह की एक पूर्व प्रतिछाया - त्यागा गया कि उद्धार करे।

या फिर मसीह के वंशक्रम को देखें। एक समय इस्त्राएल में परमेश्वर ही एकमात्र राजा था। परंतु लोगों ने विद्रोह किया और एक मानवीय राजा की मांग कीः "नहीं! हमारे ऊपर राजा ही हो" (1 शमुएल 8:19)। बाद में उन्होंने अंगीकार किया, "हमने अपने लिए राजा की मांग करके सब पापों को और भी बढ़ा दिया है" (1 शमुएल 12:19)। परंतु परमेश्वर उन बातों उपस्थित था। इन राजाओं के वंश से उसने मसीह को संसार में लाया। निष्पाप उद्धारकर्ता का पृथ्वी पर मूल पाप में था जबकि वह पापियों को बचाने आया।

परंतु सबसे विस्मयकारी बात यह है कि बुराई और कष्ट पर विजय पाने के लिए बुराई और कष्ट ही मसीह का निर्धारित तरीका था। यीशु के विरूद्ध प्रत्येक कपट एवं क्रूरता पापपूर्ण एवं बुरी थी। परंतु परमेश्वर उनमें था। बाइबल कहती है, "(यीशु) परमेश्वर की पूर्व-निश्चित योजना और पूर्वज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया था" (प्रे.काम 2:23)। उसकी पीठ पर कोड़े, उसके सिर पर कांटे, उसके गाल पर थूक, उसके चेहरे पर घात, उसके हाथों में कीलें, उसके पंजर ममें भाला, शासकों द्वारा निन्दा, उसके मित्र द्वारा धोखा, उसके चेलों द्वारा त्याग दिया जाना - ये सब पाप का परिणाम थे, और ये

सब पाप की शक्ति को नाश करने के लिए परमेश्वर की पूर्व योजना में थे। "हेरोदेस और पिन्तियुस पिलातुस (ने) भी गैरयहूदियों और इस्त्राएलियों के साथ - वही (किया) जो कुछ तेरी सामर्थ और योजना में पहिले से निर्धारित किया गया था" (प्रे.काम 4:27–28)।

परमेश्वर के पुत्र से घृणा करने तथा उसे मार डालने से बढ़कर कोई पाप नहीं है। मसीह के दुखभोग तथा निर्दोषता से बढ़कर कोई दुखभोग या कोई निदोषता नहीं थी। फिर भी परमेश्वर उन सबमें था। "यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले" (यशायाह 53:10)। बुराई तथा दुखभोग से होकर उसका लक्ष्य बुराई तथा कष्टों का नाश करना था। "उसके कोड़े खाने से हम चंगे हुए" (यशायाह 53:5)। इसीलिए यीशु मरने आया। परमेश्वर की संसार को यह दिखाने की योजना थी कि कोई पाप और कोई बुराई इतनी बड़ी नहीं है कि परमेश्वर उनसे अनंत धार्मिकता और आनन्द न ला सके। जो कष्ट हमने दिए वे ही हमारे उद्धार की आशा बन गए। "हे पिता, इन्हें क्षमा कर क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं" (लूका 23:34)।

यह सब परमेश्वर के विषय ही क्यों है?

मसीह भी सब के पापों के लिए एक ही बार मर गया, अर्थात् अधर्मियों के लिए धर्मी जिससे वह हमें परमेश्वर के समीप ले आए।

1 पतरस 3:18

परंतु अब तो मसीह यीशु में तुम, जो पहले दूर थे, मसीह के लोहू के द्वारा निकट हो गए हो।

इफिसियों 2:13

तब मैं परमेश्वर की वेदी के पास जाऊंगा, उस ईश्वर के पास जो मेरे अति आनन्द का कुंड है।

भजन 43:4

कुल मिलाकर परमेश्वर ही सुसमाचार है। सुसमाचार का अर्थ है 'शुभ संदेश।' मसीहियत पहले धर्मविज्ञान नहीं है, परंतु संदेश है। यह मानो युद्ध -बंधकों द्वारा गुप्त रेडियो से यह सुनना है कि मित्र-राष्ट्रवादी पहुँच गए हैं और कुछ ही समय में छुटकारा मिल जाएगा। पहरुए चकित हैं कि सब लोग आनन्द क्यों मना रहे हैं।

परंतु इस शुभ संदेश में परम शुभ क्या है? यह सब एक बात में अंत होता हैः स्वयं परमेश्वर। सुसमाचार के प्रत्येक शब्द उसकी ओर ले जाते हैं, अन्यथा वे सुसमाचार नहीं हैं। उदाहरण के लिए, उद्धार सुसमाचार नहीं यदि यह केवल नर्क से बचाता है और परमेश्वर के पास जाने के मार्ग को नहीं खोलता है। धर्मी ठहराए जाना शुभ संदेश नहीं है यदि यह केवल हमें वैधानिक रूप से परमेश्वर को ग्रहणयोग्य बनाता है परंतु परमेश्वर के साथ हमारी सहभागिता स्थापित नहीं करता है। छुटकारा शुभ संदेश नहीं है यदि यह हमें केवल बंधनों से छुड़ाता है परंतु हमें परमेश्वर के समीप नहीं लाता है। लेपालकपन शुभ संदेश नहीं है यदि यह केवल हमें पिता के परिवार में रखता है, परंतु उसकी बाहों में नहीं।

यह अति महत्वपूर्ण है। अनेक लोग परमेश्वर को अपनाए बिना शुभ संदेश को अपनाते प्रतीत होते हैं। कोई पक्का प्रमाण नहीं है

कि हमारा एक नया हृदय है मात्र इसलिए कि हम नर्क से बचना चाहते हैं। यह एक पूर्णतः स्वाभाविक अभिलाषा है, न कि अलौकिक। क्षमा की भावात्मक राहत, या परमेश्वर के क्रोध के दूर किए जाने या परमेश्वर के संसार के वारिस बनने की चाहत के लिए एक नए हृदय की आवश्यकता नहीं होती है। इन सब बातों को बिना किसी आत्मिक परिवर्तन के समझा जा सकता है। इन बातों की अभिलाषा करने के लिए आपको नया जन्म पाने की आवश्यकता नहीं है। शैतान उनकी अभिलाषा करता है।

उनकी अभिलाषा करना गलत नहीं है। वास्तव में तो उनकी अभिलाषा न करना मूर्खता है। परंतु यह प्रमाण कि हम परिवर्तित हुए हैं यह है कि हम इन बातों की अभिलाषा इसलिए करते हैं क्योंकि ये हमें परमेश्वर के साथ आनन्द प्रदान करती हैं। मसीह इस सबसे बड़े बात के लिए मरा। "मसीह भी सबके पापों के लिए एक ही बार मर गया, अर्थात् अधर्मियों के लिए धर्मी *जिस से वह हमें परमेश्वर के समीप ले आए"* (1 पतरस 3:18)।

यह शुभ संदेश का सार क्यों है? क्योंकि हमें परमेश्वर की महिमा को देखने एवं उसका आनन्द लेने से प्राप्त पूर्ण एवं अनन्त खुशी का अनुभव करने के लिए बनाया गया था। यदि हमें सबसे

बड़ा आनन्द इससे कुछ कम से आता है तो हम मूर्तिपूजक हैं और परमेश्वर का अपमान होता है। हमें उसने इस रीति से बनाया है कि उसकी महिमा उसमें हमारे आनन्द के द्वारा प्रदर्शित होती है। मसीह का सुसमाचार का शुभ संदेश है जो कि उसके पुत्र के प्राण के मूल्य द्वारा, परमेश्वर ने उस सबकुछ आवश्यक कार्य को कर दिया है कि हमें उस बात से वशीभूत करे जो हमें सदा के और सदा बढ़ने वाले आनन्द को देगा अर्थात् स्वयं परमेश्वर को।

मसीह के आने से बहुत पहले, परमेश्वर ने अपने आपको पूर्ण तथा अनंत आनन्द के मूल के रूप में प्रकट किया था। "तू मुझे जीवन का मार्ग दिखाएगा, तेरी उपस्थिति में आनन्द की भरपूरी है, तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है" (भजन 16:11)। तब उसने मसीह को दुख उठाने भेजा "कि वह हमें परमेश्वर के समीप ले आए।" इसका अर्थ है कि उसने मसीह को भेजा कि हमें गहनत्तम सबसे लम्बा आनन्द दे। तब इस निमंत्रण को सुनिएः "पाप के क्षणिक सुख" से विमुख हो (इब्रा. 11:25) और "सदा के सुख" के पास आओ। मसीह के पास आओ।

यह सब मेरे लिए क्या अर्थ रखता है?

मैंने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिए लिखा है, कि तुम जानो कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।

1 यूहन्ना 5:13

मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु वह मृत्यु के पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।

यूहन्ना 5:24

इसलिए मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाए, जिससे प्रभु के सन्मुख से विश्रान्ति के दिन आए।

प्रे. काम 3:19

अपने आप को परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखो; और अनन्त जीवन के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया की आशा देखते रहो।

यहूदा 1:21

परमेश्वर ने हमें उसकी महिमा के लिए सृजा

मेरे पुत्रों को दूर से और मेरी पुत्रियों को पृथ्वी की छोर से ले आओ; ...जिसको मैंने अपनी महिमा के लिये सृजा।

यशायाह 43:6–7

परमेश्वर ने हमें उसकी महानता की महिमा करने के लिए सृजा है - जिस रीति से टेलिस्कोप तारागणों को आवर्धित करते हैं। उसने अपनी भलाई और सत्य और सुंदरता और बुद्धि और न्याय को प्रदर्शित करने के लिए हमें सृजा है। परमेश्वर की महिमा का महानतम प्रदर्शन जो कुछ वह है उसमें गहन आनन्द उठाने में होता है। इसका अर्थ है कि परमेश्वर की स्तुति होती है और हमें सुख मिलता है। परमेश्वर ने हमें ऐसे सृजा है कि वह हम में सबसे अधिक महिमा पाता है जब हम उसमें सबसे अधिक संतुष्ट होते हैं।

प्रत्येक मनुष्य को परमेश्वर की महिमा के लिए जीना चाहिए

इसलिए तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो।

1 कुरिं. 10:31

यदि परमेश्वर ने हमें उसकी महिमा के लिए सृजा है, तो यह स्पष्ट है कि हमें उसकी महिमा के लिए जीना चाहिए। हमारे कर्तव्य उसकी योजना अनुसार हैं। अतः हमारा पहला कर्तव्य हमारे लिए वह जो कुछ है उसमें संतुष्ट होने के द्वारा परमेश्वर के मूल्य को दिखाता है। परमेश्वर से प्रेम करने का सार यही है (मत्ती 22:37) और उस पर भरोसा रखना (1 यूहन्ना 5:3–4) और उसके प्रति धन्यवादी होना (भजन 100:2–4)। यह सच्चे आज्ञापालन का आधार है, विशेषकर दूसरों से प्रेम करना (कुलु. 1:4–5)।

हम सब परमेश्वर को वैसी महिमा देने में चूक गए हैं जैसी हमें देना चाहिए

इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।
रोमियों 3:23

"परमेश्वर की महिमा से रहित" होने का अर्थ क्या है? इसका अर्थ है कि हममें से किसी ने भी परमेश्वर पर ऐसा विश्वास नहीं रखा और उससे ऐसा प्रेम नहीं किया जैसा हमें करना चाहिए। हम उसकी महानता से संतुष्ट नहीं हुए और उसके मार्गों में नहीं चले। हमने दूसरी बातों में अपनी संतुष्टी खोजी, और उन्हें परमेश्वर से अधिक

मूल्यवान समझा, जो कि मूर्तिपूजा के बराबर है (रोमियों 1:21–23)। जब से पाप इस संसार में आया हम सब परमेश्वर को अपने सर्व-संतुष्टि-दायक धन के रूप में मानने के घोर विरोधी रहे हैं (इफिसियों 2:3)। यह परमेश्वर की महानता के प्रति एक भयंकर अपराध है (यिर्म. 2:12–13)।

हम सब परमेश्वर के उचित दण्ड के योग्य हैं

पाप की मजदूरी तो मृत्यु है...
रोमियों 6:23

हम सबने परमेश्वर की महिमा को तुच्छ जाना है। कैसे? उससे बढ़कर दूसरी बातों को प्राथमिकता देने के द्वारा। हमारी कृतघ्नता, अविश्वास और अवज्ञा द्वारा। अतः परमेश्वर हमें सदा के लिए उसकी महिमा का आनन्द उठाने से दूर करने में न्यायोचित है। "ऐसे लोग उस दिन प्रभु की उपस्थिति तथा उसकी शक्ति के प्रताप से दूर होकर अनंत विनाश का दण्ड पाएंगे" (2 थिस्स. 1:9)।

नया नियम में बारह बार "नरक" शब्द का उपयोग हुआ है - ग्यारह बार स्वयं यीशु द्वारा। यह निराश और क्रोधित उपदेशकों द्वारा रची गई झूठी कहानी नहीं है। यह उस परमेश्वर के पुत्र की

ओर से एक गंभीर चेतावनी है जो इसके शाप से पापियों को छुड़ाने के लिए मरा। हम बड़ा जोखिम उठाते हुए इसे अनदेखा करते हैं।

यदि मानवीय दशा के अपने मूल्यांकन में बाइबल यहीं रुक जाती है तो हम आशाहीन भविष्य के लिए त्याग दिए जाते। तथापि, यह यहाँ नहीं रुकती है...

परमेश्वर ने अनंत जीवन और आनन्द देने के लिए अपने एकलौते पुत्र को भेजा

मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिए जगत में आया...
1 तीमु. 1:15

शुभ समाचार यह है कि मसीह हम जैसे पापियों के लिए मरा। और वह अपनी मृत्यु की उद्धार देने वाली सामर्थ को सत्यापित करने और अनंत जीवन तथा आनन्द के द्वारों को खोलने के लिए शारीरिक रूप से जीवित हो गया (1 कुरिं. 15:20)। इसका अर्थ है कि परमेश्वर दोषी पापियों को निर्दोष घोषित करने पर भी सच्चा न्यायी रह सकता है (रोमियों 3:25–26)। "मसीह भी सब के पापों के लिए एक ही बार मर गया, अर्थात् अधर्मियों के लिए धर्मी जिससे

वह हमें परमेश्वर के समीप ले आए" (1 पतरस 3:18)। परमेश्वर के समीप आने में ही गहरी तथा स्थायी संतुष्टि प्राप्त होती है।

मसीह की मृत्यु द्वारा खरीदे गए लाभ उनके हैं जो पश्चाताप करते और उस पर विश्वास रखते हैं

प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।
प्रे. काम 16:31

"पश्चाताप" करने का अर्थ पाप की समस्त धोखापूर्ण प्रतिज्ञाओं से विमुख होना है। "विश्वास" का अर्थ यीशु मसीह में परमेश्वर हमारे निमित्त जो कुछ होने की प्रतिज्ञा करता है उस से संतुष्ट होना है। यीशु कहता है, "जो मुझ पर विश्वास करता है वह कभी प्यासा न होगा" (यूहन्ना 6:35)। हम अपने उद्धार को अर्जित नहीं करते हैं। हम इसके योग्य नहीं हो सकते हैं (रोमियों 4:4–5)। यह विश्वास के द्वारा अनुग्रह से है (इफिसियों 3:24)। यदि हम सब बातों से बढ़कर उसे प्रेम करेंगे तो उसे पाएंगे (मत्ती 13:44)। जब हम ऐसा करते हैं तो सृष्टि में परमेश्वर का लक्ष्य पूरा होता है: वह हम में महिमा पाता है और हम उसमें संतुष्ट होते हैं - सर्वदा के लिए।

मुझे क्या करना चाहिए?

एक मनुष्य उसके पास दौड़ता हुआ आया और उसके आगे घुटने टेककर उससे पूछा, "हे उत्तम गुरु, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिए मैं क्या करूं?"

मरकुस 10:17

और कांपता हुआ पौलुस और सीलास के आगे गिरा। और उन्हें बाहर लाकर कहा, "हे साहिबो, उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूं?" उन्होंने कहा, "प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।"

प्रे. काम 16:29–30

- पाप की धोखापूर्ण प्रतिज्ञाओं से विमुख हों।

- अधर्म और दण्ड और बंधन से छुड़ाए जाने के लिए यीशु को पुकारें। "जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा" (रोमियों 10:13)।

- यीशु मसीह में परमेश्वर आपके लिए जो कुछ है उस पर अपनी आशा रखना आरम्भ करें।

- परमेश्वर की प्रतिज्ञा की उत्तम संतुष्टि में विश्वास द्वारा पाप की प्रतिज्ञाओं की शक्ति को तोड़ें।

- उसकी बहुमूल्य तथा अति महान् प्रतिज्ञाओं को, जो आपको स्वतंत्र कर सकती है, पाने के लिए बाइबल पढ़ना आरम्भ करें (2 पतरस 1:3–4)।

- एक बाइबल पर विश्वास करने वाली कलीसिया को ढूंढें और ऐसे अन्य लोगों के साथ आराधना करना तथा बढ़ना आरम्भ करें जो सब बातों से बढ़कर मसीह से प्रेम करते हैं (फिलिप्पियों 3:7)।

क्या आपको मालूम था कि परमेश्वर आपको खुश रहने की आज्ञा देता है?

आनन्द से यहोवा की आराधना करो! जयजयकार के साथ उसके सम्मुख आओ!

भजन 100:2

यहोवा को अपने सुख का मूल जान, और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा।

भजन 37:4

इस संसार में सबसे अच्छा समाचार यह है कि हमारी सबसे बड़ी सम्भव खुशी और परमेश्वर की सिद्ध पवित्रता के मध्य कोई टकराव नहीं है। यीशु मसीह में परमेश्वर जो कुछ भी आपके लिए है उससे संतुष्ट रहना, सबसे बड़े धन के रूप में यीशु को महिमा देना है और आपको किसी भी अन्य खुशी से बढ़कर अधिक आनन्द - अनंत, असीम आनन्द देता है।

तू मुझे जीवन का रास्ता दिखाएगा; तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है, तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है।
भजन 16:11

जॉन पाइपर की अनुशंसित रचनाएं

द पैशन ऑफ जीज़स क्राईस्ट
सिइंग एण्ड सेवोरिंग जीज़स क्राईस्ट
डोन्ट वेस्ट योर लाईफ
डिसायरिंग गॉड
वेन आय डोन्ट डिसायर गॉड
टेस्ट एण्ड सी
गॉड इज द गॉस्पल
फ्यूचर ग्रेस

❋ डिसायरिंग गॉड (Desiring God)

डिसायरिंग गॉड एक सेवकाई है जो कि यीशु मसीह द्वारा जब लोगों के आनन्द के लिए सब बातों में परमेश्वर की श्रेष्ठता के लिए धुन को फैलाने में लगी है। हम आपके आनन्द के लिए हैं, क्योंकि जब हम परमेश्वर में सबसे संतुष्ट होते हैं तो वह हम में सबसे अधिक महिमा पाता है। पास्टर जॉन पाईपर की ओर से निःशुल्क तथा बहुत कम मूल्य में परमेश्वर-केन्द्रित स्त्रोतों को पाने के लिए हमारी वेबसाईट पर जाईए। इस स्त्रोतों में पुस्तकें, सी. डी., वी.सी.डी., उपदेश, लेख, बच्चों के सण्डेस्कूल पाठ्यक्रम इत्यादि शामिल हैं।

Desiring God
OM Books
Logos Bhavan
Jeedimetla Village, Secunderabad - 55
India

Website: www.ishwarkaamanaa.org

आप-जो-कुछ-दे-सकते-हैं

डिसायरिंग गॉड धन कमाने के लिए नहीं है। हम सुसमाचार फैलाने में लगे हैं। इसीलिए हम अपनी "ऑनलाईन" सामग्रियां नि:शुल्क देते हैं और अन्य सामग्रियों का बहुत कम मूल्य है। यद्यपि हम इस मूल्यों को बहुत कम रखते हैं परंतु फिर भी हमने देखा है कि कभी कभी कुछ लोग उन्हें खरीद नहीं सकते हैं। इन मित्रों के लिए, हमारी आप-जो-कुछ-दे-सकते-हैं नीति है। लोग जो कुछ देंगे हम ग्रहण करेंगे - चाहे वे कुछ न भी दें। हमें जो कुछ सेंतमेंत मिला है उसे सेंतमेंत देने में हमें खुशी होती है (मत्ती 10:8)। और हम कभी भी मूल्य को "मसीह के सुसमाचार के मार्ग में बाधा" नहीं बनने देना चाहेंगे (1 कुरिं. 9:12)। अंत में, यदि आप हमारी किसी पुस्तक या सी.डी. को पाना चाहते हैं परंतु आपके धन की कमी आपको रोकती है, शर्मिन्दा महसूस न करें। हम से संपर्क करें और बताएं कि आपको क्या चाहिए, और आपके निवेदन को पूरा करने में हमें प्रसन्नता होगी।

लेखक

जॉन पाइपर बेतलेहम बेप्टिस्ट चर्च, मिनियापोलिस, मिन्नेसोटा में उपदेशक पास्टर हैं। वे ग्रीनविले, साऊथ कैरोलीना में पले-बढ़े, और व्हीटन कॉलेज में शिक्षा प्राप्त की, जहाँ उन्होंने पहली बार सेवकाई में आने के लिए परमेश्वर की बुलाहट प्राप्त की। उन्होंने फुलर थियोलॉजिकल सेमिनरी से बी.डी. तथा यूनिवर्सिटी ऑफ म्यूनिक से डी. थियोलॉजी डिग्रियां प्राप्त की। छः वर्षों तक उन्होंने सेंट पॉल, मिनेसोटा में बेतेल कॉलेज में बाइबल स्टडीज़ का अध्यापन किया, और 1980 में बेतलेहम में पास्टर के रूप में सेवा करने की परमेश्वर की बुलाहट को स्वीकार किया। उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी हैं और वे डिसायरिंग गॉड रेडियो कार्यक्रम में प्रतिदिन प्रचार करते हैं। वे और उनकी पत्नी नोएल चार पुत्रों, एक पुत्री और निरंतर बढ़ते नाती-पोतों के द्वारा आशीषित हैं।

पचास कारण कि यीशु क्यों मरने आया

जॉन पाइपर

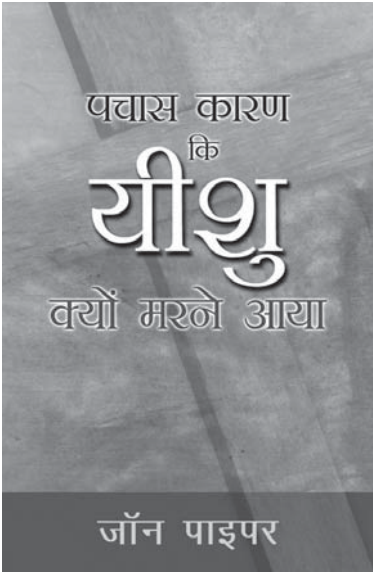

Pages-128
ISBN : 978-93-80737-28-7

आपके द्वारा परमेश्वर कि खोज

रिचर्ड ए. बेन्नेट

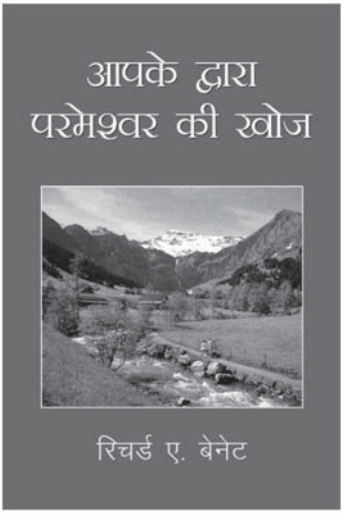

Pages-144
ISBN : 978-81-7362-256-4

साधु सुन्दर सिंग

फिलिस थामसन

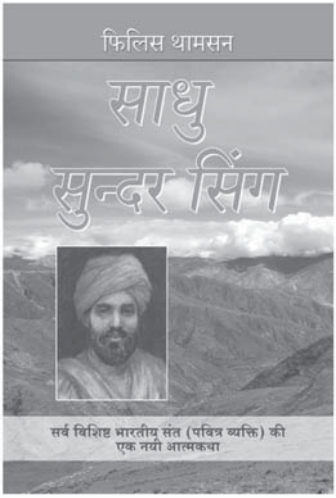

Pages-172
ISBN : 978-81-7362-400-1

ज़िन्दगी के पलटते पत्ने
ऑलिव ई. सिंह

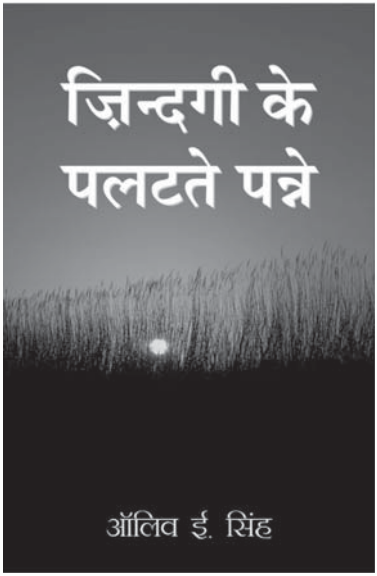

Pages-94
ISBN : 978-81-7362-366-0